अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

पर्यावरण चेतना के अग्रदूतः गुरू जाम्भोजी

भगवाना राम बिश्नोई
सह आचार्य–हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, सिरोही, राजस्थान
Email: brsirohi29@gmail.com

विश्व आज जिस पर्यावरण संरक्षण पर जोर देकर चेतना जागृत करने का पयास कर रहा है उस चेतना का बिन्दुरूप मध्यकालीन भारतीय संत परंपरा के संतश्री जांभोजी ने अपनी शब्दवाणी में समाहित कर दिया था।

मध्यकालीन भारतीय साहित्य में संत परम्परा में पर्यावरण एवं जीव रक्षा की महत्ता प्रतिपादित करने वाले संत जांभोजी का जन्म सन् 1451 में पीपासर, जिला नागौर में हुआ था। आपने सन 1485 में बिश्नोई पंथ की स्थापना की, जिसमें जीवन पद्धत्ति के कुछ विशिष्ट नियम, जो कि जीव दया, प्रकृति प्रेम, पर्यावरण संरक्षण एवं जीवन–मूल्यों पर आधारित थे।

''जोव दया पालणी, रूँख लीलौ नहिं घावै'' अर्थात् प्राणि–मात्र के प्रति दया भाव रखना तो प्राथमिकता है ही उसके साथ–साथ पर्यावरण को बचाने का प्रयास भी करना चाहिए और किसी भी हरे वृक्ष (रूँख लीलौ) को नहीं काटना चाहिए। इस नियम में पर्यावरण संरक्षण को उतना ही महत्वपूर्ण स्थान दिया है जितना कि इस चराचर जगत में पाणि–मात्र को दिया है। कहने का तात्पर्य है कि प्रकृति में निवसित प्राण और प्रकृति दोनों का संतुलन यदि बना रहेगा तो ही यह संसार उन्नति कर सकेगा।

विश्व आज जिन पर्यावरणीय संकटों–यथा ग्लोबल वार्मिंग, क्लाईमेट चेंजिग, त्रिस्तरीय प्रदूषण जल संकट का सामना कर रहा ह उन संकटों के बारे में 500 वर्ष पूर्व संत जांभोजी द्वारा सजग करना उनकी अग्रगामी सोच और पर्यावरण संरक्षण की चेतना को दर्शाता है। यदि समय रहते विश्व ने इन समस्याओं के समाधान के लिए प्रयास और प्रावधान नहीं किए तो संपूर्ण मानव–जाति के अस्तित्व पर संकट आ जाएगा।

इसी संकंट के प्रति सोच रखते हुए जांभोजी ने आगाह कर दिया था कि मनुष्य को अपनी जीवन पद्धति में सुधार लाना ही प्रकृति को बचाने का कार्य कर सकता है। इन सब

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

बातों को ध्यान में रखते हुए जांभोजी के अनुयायी 'विश्नोई संप्रदाय' आज भी अपने प्राणों स भी अधिक स्नेह और संरक्षण जीवों और वृक्षों को देते हैं और समय–समय पर जीव रक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए अपने प्राणों को भी न्यौछावर कर देते है ऐसे उदाहरण विश्व में अत्यंत दुर्लभ है जहां जीव एवं वृक्ष रक्षार्थ मनुष्यों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए है। इस संप्रदाय के अनुयायी पर्यावरण संरक्षण को एक धर्म एवं कर्त्तव्य के रूप में मानते है। पर्यावरण संरक्षण और जीव एवं वृक्षों की रक्षा के लिए खुद की बलि देना ही अपने आप में महान कार्य है। जांभोजी द्वारा स्थापित विश्नोई संप्रदाय में अनेको ऐसे प्रसंग आए है जहां वृक्षों के लिए इस संप्रदाय के अनुयायियों ने अपने प्राणों की आहुति दी है।

सर्वप्रथम ज्ञात स्त्रोतों के आधार पर पेड़ों की रक्षा के लिए रेवासड़ी गांव में 'करमा और गौरा' ने आत्म–बलिदान दिया । इसके बाद कई बार इस संप्रदाय के अनुयायियों ने पेड़ रक्षार्थ बलिदान दिया परन्तु 12 सितम्बर, 1730 को जोधपुर रियासत के दरबारी गिरधर भंडारी के नेतृत्व में राजा की सेना खेजड़ी के वृक्ष काटने के लिए 'खेजड़ली' गांव में पहुँचती है और पेड़ों को काटने लगती है तो वहां ''अमृता देवी बिश्नोई'' के नेतृत्व में विश्नाई सम्प्रदाय के लोगों ने विरोध किया परन्तु राजसेना ने उनकी बात नहीं मानी और पेडों की कटाई के लिए आगे बढ़ी तो अमृता देवी ने पेड से चिपक कर ''सिर सांटे रूँख रहे तो भी सस्तो जाण'' (अर्थात सिर के बदल वृक्षों की हिफाजत होती है तो यह भी सस्ता सौदा है) के मंतव्य के अपनी तीन पुत्रियों को लेकर वृक्षों के चिपक गई और अपना बलिदान वृक्षों की रक्षार्थ कर दिया। अमृता देवी के बलिदान की चर्चा सुन आसपास के 84 गांवो के विश्नोई संप्रदाय के लोग खेजड़ली पहुंचे और पेड़ों से चिपक कर अपनी जान दे दी इस प्रकार 363 बिश्नोई संप्रदाय के अनुयायियों ने इस ''प्रथम चिपको आन्दोलन'' में अपनी शहादत दी।

वृक्षों की रक्षार्थ इतना बड़ा बलिदान इतिहास मे 'न भूतो न भविष्यति' हुआ। आज सरकार भी मां अमृता देवी के नाम से पर्यावरण पुरस्कार प्रदान करती है परन्तु सरकारों का ध्यान पर्यावरण संरक्षण पर उतना नहीं है जितना होना चाहिए।

इतना ही नहीं इसके बाद भी आज तक पर्यावरण एवं जीव रक्षार्थ बलिदान जांभोजी के अनुपायी करते आ रहे है। जांभोजी की शब्दवाणी में भी हरे वृक्षों का बार–बार उल्लेख करते है –

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

''हरि कंकेड़ी मंडप मेडी, जहां हमारा वासा'' अर्थात हरि कंकेडी के पेड़ में ही हमारा निवास है अर्थात जहां हरियाली है वहां पर ही ईश निवास है।

5 जूनको हम विश्व पयावरण दिवस मनाते है क्योंकि 5 जून 1972 की स्टाकहोम में पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रथम विश्व पृथ्वी शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ था, जबकि प्रथम चिपको आंदोलन और प्रथम पर्यावरण संरक्षण के प्रणेता संत की वाणी में छिपे पर्यावरणीय स्वरूप को समझकर उसका प्रसार–प्रचार किया होता तो विश्व आज इस भयंकर पर्यावरण प्रदूषण एवं दूषित वातावरण में नहीं जीता। जांभोजी के उपदेशों का समग्र रूप से अंगीकार करने वाले सम्प्रदाय विशेष के बलिदानों को भी विश्व पटल पर रखा जाता तो उसके प्रति जागरूकता का भाव विकसित होता।

इतना ही नहीं जांभोजी ने जिस भक्ति पद्धति को अपनाने का कहा उसमें हवन को सर्वोपरि माना, हवन से न केवल मानसिक एवं अध्यात्मिक शांति मिलती है वरन् पर्यावरण शुद्धि भी होती है।

जांभोजी की वाणी में जिस पर्यावरण एवं जीव संरक्षण का उपदेश है उन उपदेशों का असर तत्कालीन शासकों पर भी था कहा जाता है कि जांभोजी की बातो से प्रभावित होकर सिकन्दर लोदी (दिल्ली) शेख सदू (मलेरकोटड़ा पंजाब) और मुहम्मद खॉ नागौरी ने अपने यहां जीव हत्या बंद करवाई थी, साथ ही कई राजाओं ने पर्यावरण एव जल संरक्षण के लिए कुए, बावडो तालाब आदि बनवाएं उनमें जैसलमेर के राजा राव जैतसिंह ने 'जैतसागर' नामक तालाब का निर्माण करवाया जिससे मरूप्रदेश में हरियाली आच्छादित होने लगी।

सारांशतः कह सकते है कि विश्व आज जिन पर्यावरण प्रद्षण की समस्याओं से जूझ रहा है और उसके निवारणार्थ अरबों रूपये खर्च कर रहा है। उन सभी समस्याओं के बारे में विश्व के प्रथम पर्यावरणविद् संत जांभोजी ने 15 वीं सदी में ही चेता दिया था। जांभोजी की दूरदर्शी सोच को अगर विश्व अंगीकार कर लेता तो आज इन समस्याओं से रूबरू नहीं होना पड़ता।

मरूप्रदेश के लोगो को सहन सरल और साधारण जीपन यापन विधि एवं प्रकृति से सांमजस्य जिस साधारण भक्ति पद्धति को समझाया उससे आज तक मरू प्रदेश प्राकृतिक वातावरण से सामन्जस्य स्थापित कर जी रहा है। हालाकि अभी यहां भी आधुनिकता की

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

अंधी दौड़ ने अपनी पेठ जमानी प्रांरभ कर दी है, जो कि विश्व पर्यावरण के लिए खतरा है। अतः हमें समय रहते सजग हो जांभोजी के बताये मार्ग पर चलकर पर्यावरण एवं प्रकृति के साथ सामन्जस्य बिठा कर अपनी जीवन पद्धति प्रांरभ करनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. बिश्नोई अनिला (अक्टूबर, 2019), "अमर ज्योतिः पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रीका", अंक 8, बिश्नोई सभा, हिसार (हरियाणा)।
2. बिश्नोई कृष्णलाल (1991), "बिश्नोई धर्म संस्कार", धोक धोरा प्रकाशन, गंगाशहर, बीकानेर (राजस्थान)।
3. बिश्नोई कृष्णलाल (2000), "गुरू जाम्भोजो एवं बिश्नोई पंथ का इतिहास", सम्राथल, अबूबशहर, सिरसा (हरियाणा)।
4. बिश्नोई कृष्णलाल (2014), "गुरू जाम्भोजी का जीवन दर्शन", जाम्भाणी साहित्य अकादमी बीकानेर (राजस्थान)।
5. पारिक सूर्य शंकर (2008), "जाम्भोजी की वाणी", द्वितीय संस्करण, विकास प्रकाशन, बीकानेर (राजस्थान)।